

Bein. der Sonne AK. 1, 1, 2, 29. H. 96. MBh. 3, 156.

द्वादशादित्यतीर्थ (द्वादशन् + आदित्य + तीर्थ) n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes ÇIVA-P. in Verz. d. Oxf. H. 67, a, 27.

द्वादशादित्याश्रम (द्वादशन् + आदित्य + आश्रम) m. N. pr. einer geheiligten Einsiedelei SKANDA-P. in Verz. d. Oxf. H. 77, a, 7.

द्वादशाध्यायी f. Titel der aus 12 Adhijāja bestehenden Mīmāṃsā des Gaimini, VINAJAKA zu ÇĀṆKH. Br.

द्वादशान्यिक (द्वादशन् + अन्य) adj. der 12 Fehler beim Lesen gemacht hat P. 4, 4, 64, Sch.

द्वादशायुम् (द्वादशन् + आयुम्) m. Hund (dessen Lebensdauer 12 Jahre ist) ÇABDAM. im ÇKDR.

द्वादशार (द्वादशन् + अर) adj. zwölfpeichig, vom Rade des Jahres RV. 1, 164, 11. AV. 4, 33, 4.

द्वादशार्चम् (द्वादशन् + अर्चिम्) adj. zwölfstrahlig; m. Bein. Brhaspati's, der Planet Jupiter H. 118. Hār. 36. — Vgl. द्वादशकर, द्वादशाश्रु. द्वादशास्त्रि (द्वादशन् + अस्त्रि) Dodekagon; Dodekaeder COLEBR. Alg. 280.

1. द्वादशार्क (द्वादशन् + अर्क) m. ein Zeitraum von zwölf Tagen ÇAT. Br. 11, 5, 4, 9. 14, 9, 3. 1. M. 5, 83. 11, 167. 215. R. 1, 50, 15 (GORR. 51, 15).

2. द्वादशार्क (wie eben) adj. zwölf Tage dauernd; m. eine best. Zwölftagefeier: द्वादशार्कः प्राकृतो यज्ञ उक्तः MBh. 3, 10669. AV. 9, 6, 43. 11, 7, 12. AIT. Br. 4, 23. 30. ÇAT. Br. 4, 5, 9, 1. 12, 3, 7. KĪTJ. ÇR. 12, 1, 1. ÇĀṆKH. ÇR. 10, 1, 1. MBh. 13, 4934. 4938. — Vgl. भरत°, व्यूह°, संक्रम°.

द्वादशाहिक adj. von द्वादशाह Schol. zu KĪTJ. ÇR. 12, 6, 25. 24, 1, 4.

द्वादशिक (von द्वादश oder द्वादशी) adj. am 12ten Tage oder am 12ten Tage eines Halbmonats stattfindend: द्वादश R. GORR. 2, 86, 1.

द्वादशिन (von द्वादशन्) adj. aus zwölf bestehend, zwölftheilig: पाद RV. PĀT. 9, 15. 17, 21. विषुवान् ÇĀṆKH. ÇR. 13, 23, 8.

द्वादशीतीर्थ (द्वा + तीर्थ) n. N. pr. eines heiligen Badeplatzes ÇIVA-P. in Verz. d. Oxf. H. 66, b, 40.

द्वादशीव्रत (द्वा + व्रत) n. ein best. Gelübde am 12ten Tage eines Halbmonats BHĀG. P. 9, 4, 29. Verz. d. B. H. 130, a. 142.

दानवर्त (vom folg.) adj. der 92ste MBh. 8 in der Unterschr. des Adhijāja.

दानवति (द्वा + न°) f. 92, = दिनवति P. 6, 3, 49.

दापचाश (vom folg.) adj. f. 51 der 52ste: ऽपचाशौ त्रिष्टुभौ die 51ste und 52ste ÇĀṆKH. Br. 18, 3. MBh. 9 und R. 4 in den Unterschr. des Adhijāja und Sarga. — 2) von 52 begleitet, um 52 vermehrt: द्वे दापचाशे शते 252 ÇAT. Br. 7, 3, 4, 43.

दापचाशत् (द्वा + ष°) f. 52 = द्विप° P. 6, 3, 49. HARIV. 13076. RĪGĀ-TAR. 1, 16. 19. 20. 44. 54. ऽशदत्त Nidāna 1, 5.

द्वार्य (द्वा + पर) m. n. 1) derjenige Würfel (dieses wahrscheinlicher) oder diejenige Würfelseite, welche mit zwei Augen bezeichnet ist (s. den Schol. zu KĪND. Up. 4, 1, 4 und Ind. St. 1, 285, N.), VS. 30, 18. TS. 4, 3, 3, 8 (in unserer Hdschr. oxyt.). KĪTH. 39, 7. MBh. 4, 1578. 5, 4819. personif. N. 6, 1. — द्वार्यच्छन्दसि Nidāna 1, 5 und ऽस्तीमा: 9 zur Bez. der Progression um zwei. — 2) N. des 3ten Jaga oder Weltalters, das Weltalter mit den Zwei-ahlen (2000 Jahre das Jaga selbst, 200 Jahre die Morgen- und eben so viele Jahre die Abendröthe) AK. 3, 4, 25, 164. TRIK. 1, 1, 112. H. an. 3, 565. MED. r. 169. AIT. Br. 7, 15. M. 9, 301. fg.

1, 85. fg. MBh. 3, 12828. fg. HARIV. 513. 516. 11312. fg. VP. 23. BHĀG. P. 3, 11, 18. त्रेताद्वारयोः संधौ MBh. 1, 272. 282. 2713 (द्वार्ये zu lesen). 3, 11250. 12, 2684. 3408. — 3) Zweifel AK. 1, 1, 4, 12. 3, 4, 25, 164. H. 1375. H. an. MED.

द्वार f. Thor, Thür; Eingang oder Ausgang überh. NIA. 8, 9. AK. 2, 2, 15. 3, 4, 25, 172. H. 1004. UGĀVAL. zu UNĀDIS. 2, 57. वि श्रयत्तामतावृधो द्वारो देवीरमथतः RV. 1, 13, 6. AV. 9, 3, 22. 14, 1, 63. द्वार्यः VS. 30, 10. यथा विवृतायो द्वारि द्वारा प्रपद्येत ÇAT. Br. 11, 1, 4, 2. 14, 3, 4, 13. AIT. Up. 3, 12. M. 3, 88. JĀGĒ. 3, 12. N. 7, 11. 14, 25, 5. VARĀH. BRH. S. 32, 22. HIT. 24, 12. VID. 213. द्वार्यु BHĀG. P. 3, 23, 18. 4, 25, 13, 45. fg. दन्तिणे (?) द्वारि R. 6, 13, 27. द्वारि द्युनद्याः BHĀG. P. 3, 5, 1. आश्रम° DRAUP. 1, 8. R. 3, 18, 10. du. RV. 1, 48, 15. अथ द्वारा तमसो वाक्किरावः 3, 5, 1. 4, 51, 2. 9, 10, 6. ÇĀṆKH. ÇR. 10, 21, 10. Thor, Zugang so v. a. Gelegenheit MRĀKH. 138, 1. so v. a. Weg, Mittel; द्वारि am Ende eines comp. vermittelt, durch: शब्द° Z. d. d. m. G. 7, 310, N. 1. फलेच्छा° Schol. zu KAP. 1, 1. Vedāntas. (Allah.) No. 142. — Vgl. 1. डूर und द्वार; nach den verwandten Sprachen hätte man im Anlaut ध erwartet.

द्वार 1) n. SIDDH. K. 249, a, ult. (m. HARIV. 14460) dass. AK. 2, 2, 15. 3, 4, 25, 184. TRIK. 3, 3, 354. H. 1004. an. 2, 430. MED. r. 48. ÇAT. Br. 1, 6, 4, 19. 4, 3, 5, 9. 6, 3, 9. 11, 4, 4, 2. ĀÇV. GRHJ. 4, 6. KAUC. 36. द्वाराणां च भङ्गारम् M. 9, 289. अग्निस्त्वया ततो देयो द्वारतस्तस्य वेश्मनः MBh. 1, 5730. पुर्याः 14, 147. M. 5, 92. BHARTR. 1, 62. 66. 3, 66. KATHĀS. 18, 104. त्वैष्वर्यं nach Sruṅgha hinausführende Thor P. 4, 3, 86, Sch. शेरते विवृतद्वाराः R. 2, 67, 16. पश्येस्त्वमन्तश्च बह्विद्य सर्वदा कृतं च ते द्वारमपावृतं मया MBh. 4, 228. पिहित° VID. 27. पिथाय च कपाटानि महाद्वाराणि यत्नतः । एक एव महाद्वारो गमनागमने सदा ॥ HARIV. 14460. अर्गलितद्वारा KATHĀS. 19, 27. स्रुत्तद्वारं जगमा गृहं ते RV. 7, 88, 5. स्रुत्तद्वारा (पुरी) MBh. 1, 3592. 2, 1773. R. 1, 5, 8. R. GORR. 2, 109, 47. 6, 14, 19, 93, 7. उटन° ÇĀK. 96, 36. RAGH. 1, 50. पातालस्य 80. शतद्वार (विवर) HIT. 14, 18. PĀNĀT. 170, 24. बद्धद्वारकुलापस्थवग RĪGĀ-TAR. 2, 38. आश्रम° ÇĀK. 8, 16. कलिङ्गराष्ट्रद्वारेषु MBh. 1, 7821. (पवित्री) एकद्वारा Zugang 13, 4473. भिन्ध्यनीकं युधौ श्रेष्ठ द्वारं संजनयस्व नः 7, 1526. व्यूहद्वारमथाप्यौ 5237. वक्त° Oeffnung des Mundes PĀNĀT. 236, 9. घ्राणाया दन्तिणे द्वारे स्पृष्टे Nasenloch VARĀH. BRH. S. 50, 39. नाभि° BHĀG. P. 2, 10, 28. स्रोतो° SUCR. 1, 24, 17. द्वारमलभमानः पूयः 62, 20. अल्पद्वारा, महा° ein Weib mit zu schmalem, zu weitem Eingange (der Scheide) 290, 14. तस्मादेवं विच्छेदत्रिपस्य द्वारेण (so v. a. vulva; POLEY richtiger द्वारेण) नोपकामिच्छेत् BRH. ĀR. UP. 6, 4, 12. पुण्डरीकं नवद्वारम् vom Körper mit den 9 Oeffnungen AV. 10, 8, 43. नवद्वारे पुरे desgl. ÇVETĀÇV. UP. 3, 18. BHĀG. 5, 13. PRAB. 16, 7. मनो नवद्वारनिषिद्धवृत्ति KUMĀRAS. 3, 50. पुरमेकादशद्वारम् gleichfalls vom Körper KĀTHOP. 5, 1. सर्वद्वाराणि (nämlich शरीरस्य) संप्रम्य BHĀG. 8, 12. सप्तद्वारवकीर्णी (die 5 Sinnesorgane nebst Manas und Buddhi) च न वाचमन्तो वदेत् M. 6, 48. चतुर्द्वारे पुरुषम् MBh. 12, 9638. Bildl. Thor, Eingang, Zugang, der Weg zu, Mittel (= उपाय, अयुपाय TRIK. H. an. MED.): लोक° KĪND. UP. 8, 6, 5. स्वर्गद्वारमपावृतम् BHĀG. 2, 32. सर्वाण्येतानि धर्म्याणि पृथग्द्वाराणि सर्वशः MBh. 13, 5565. द्वाराण्येतानि धर्मस्य विहितानि स्वयंभुवा 1, 2579. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ÇĀK. 15. केनेदमुपदिष्टं ते मृत्युद्वारमपावृतम् R. 3, 43, 40. 4, 5, 22. HIT. 31, 22. द्वारं च मुक्तेः BHĀG. P. 8,